एक सबक़ इस्लाम से

सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद क़ल्बे आबिद साहिब क़िब्ला ताबा सराह

पिछले शुमारे से आगे

चमत्कार की ज़रूरत

''पैग़म्बरी'' एक महान पद है। पैग़म्बर के आदेश पर चलना, लोक–परलोक की सभी बातों में, वाजिब (अनिवार्य) है। सबसे बढ़े–चढ़े रहने की तलब हर आदमी के स्वभाव में है। प्रत्येक व्यक्ति दूसरों पर अपना हुक्म चलाना चाहता है। हालत यह है कि छोटे–छोटे पद पाने के लिये भी यह देखे बिना कि अहलीयत या योग्यता है कि नहीं, लोग जान तक की बाज़ी लगा देते हैं। लालची लोग ओहदे–दर्जे की छीन झपट में एक दूसरे से उलझे नज़र आते हैं। फिर भला ''पैग़म्बर'' के ऐसे महान मरतबे की तलब किसके मन में पैदा न होती। यह कोई फ़र्ज़ कर ली गयी या कपोल कल्पित बात नहीं है बल्कि ''पैग़म्बरी के झूठे दावेदार, हज़रत पैग़म्बर (स0) के पहले, आपके समय में, और निकट के भूतकाल, माज़ी–ए–क़रीब में मिलते हैं और कौन कह सकता है कि यह सिलसिला आगे न चलेगा।

''पैग़म्बरी'' के झूठे दावेदारों की तस्दीक़ और पुष्टि से सिर्फ इहलोक ही तबाह न होता बल्कि परलोक की तबाही का सामना भी था। इसलिये अल्लाह के लिये ज़रूरी था कि अगर वह सबसे बड़ा रहम करने वाला और सबसे बड़ा पालने वाला है तो इन्सानों की ग़लत राह चलने और धोके से बचाने के लिये ऐसी निशानियाँ और पहचानें नियत करे जो हर प्रकार के शक सन्देह से ऊपर हों। जिनसे सच्चे और झूठे ''पैग़म्बरी'' के दावेदारों के बीच भेद किया जा सके इसी निशानी या भेद का नाम मोअजिज़ा, चमत्कार है।

चमत्कार क्या है?

मोजिज़ा ऐसी बात को कहते हैं जो अक़्लन मोहाल तो न हो यानी बुद्धि उसे असम्भव न मानती हो लेकिन उसका अन्जाम देना भी किसी के बस में न हो और जिसको पैग़म्बर अपनी पैग़म्बरी के सुबूत में, प्रमाण में पेश करे। चमत्कार और जादू–टोने में अन्तर यह है कि अगरचे जादूगरी की तरह की चीज़ें भी आम लोगों के बस में नहीं होती लेकिन उनको सीखा जा सकता है। और जो भी चाहे वह तरीक़े बरत के जो जादूगर बरत्ते हैं, उसी ढंग से काम अन्जाम दे सकता है लेकिन चमत्कार के ऐसे कारण नहीं होते जिन्हें हासिल किया जा सके। चमत्कार तो उसी के हाथ से ज़ाहिर हो सकता है जिसके लिये अल्लाह चाहे।

कुछ लोगों का कहना है कि कुर्आन ने

उद्घोष किया है, एलान किया है कि, *''हमारे तरीक़े में तब्दीली न पाओगे। और मोजिज़ा आम मुरव्वज तरीक़े में तब्दीली है जिसकी कुर्आन नफ़ी कर रहा है।''* अर्थ यह हुआ कि चमत्कार सामान्य प्रचलित रीति में परिवर्तन है जिसे कुर्आन नकार रहा है। देखने में यह लोग ''अल्लाह के तरीक़े और सुन्नत का मतलब यह लेते हैं कि यह ऐसी बात है जो बराबर हुआ करती है। अगर इसे मान लें तो फिर सूर्य ग्रहण और चाँद ग्रहण जो वर्ष में कभी पड़ता है, या ज़लज़ला यानी भूकम्प जो कभी–कभी आता है, इसे भी अल्लाह की सुन्नत में परिवर्तन मानना पड़ेगा। यथार्थ यह है कि चमत्कार भी अल्लाह की सुन्नत है क्योंकि अल्लाह की यह भी सुन्नत है कि वह अपने पैग़म्बर की तस्दीक़ (सत्यापन) के लिये मोजिज़ा ज़ाहिर, चमत्कार प्रकट करता रहता है।

धर्म आप कोई सा भी माने चमत्कार को हर दशा में मानना होगा। यहूदियों की किताबें ''तौरेत और तालमून'' चमत्कारों की चर्चा से पटी हुई हैं। हज़रत ईसा का बीमारों को अच्छा करना, मुर्दों को ज़िन्दा कर देना चमत्कार नहीं तो और क्या है। यहाँ तक कि कुछ धर्मों ने इतना मुबालग़ा किया, इतना बढ़ाया चढ़ाया कि उसे बकवास तक पहुँचा दिया।

मुसलमानों के लिये तो चमत्कार के इन्कार की गुंजाइश ही नहीं क्योंकि कुर्आन मजीद ने हज़रत इब्राहीम के लिये ऐसी चिड़ियों के, कि जिन्हें क़ीमा बना दिया गया था ज़िन्दा होने, हज़रत मूसा के लिये नील नदी में दरार पड़ जाने और हज़रत ईसा के लिये मिट्टी के पंक्षियों से असली पंक्षी बन जाने, मुर्दों के ज़िन्दा होने, हज़रत सुलेमान के तख़्त के एक महीने की राह तक सुब्ह शाम हवा पर उड़ने की चर्चा की है तो फिर मुसलमान चमत्कार का इन्कार करेंगे तो कैसे! और यह भी कैसे बन पड़ेगा कि दूसरे पैग़म्बरों के चमत्कारों का कुर्आन में बयान हो और आख़िरी पैग़म्बर के लिये कह दिया जाये कि उनको कोई मोजिज़ा (चमत्कार) नहीं दिया। इसलिए तथ्य यह है कि हमारे नबी (स0) को दो तरह के चमत्कार दिये गये एक सदाबहार हमेशा बना रहने वाला और दूसरे अन्य पैग़म्बरों की भाँति वक्ती मोजिज़े, सामयिक चमत्कार। सामयिक चमत्कार तो बहुतेरे हैं जिनकी एक से दूसरे तक होती हुई जानकारी हम तक उसी तरह पहुँची जैसे दूसरे पैग़म्बरों के चमत्कारों की। मिसाल के तौर पर ''जुल अशीरा'' के भोज में थोड़े से खाने में बहुत से लोगों का पेट भर खा लेना या शबे हिजरत यानी मक्का त्याग के मदीने जाने वाली रात में ''सोर'' नामी गुफा में हज़रत पैग़म्बर (स0) के होने की बात छिपाने के लिये मकड़ी द्वारा जाला तान दिया जाना और कबूतर द्वारा अण्डे दे दिया जाना।

(जारी)